"मोमिन बल धनी का"

(श्रीमती कंचन आहूजा जयपुर)

यह माया एक विशाल विष का सागर है जिसके विषैले नाग जगह-जगह पर हमारे सामने परेशानियों या कठिनाइयों के रूप में आकर खड़े हो जाते हैं जिससे डरकर हम हर रास्ते पर कदम पीछे करने को मजबूर हो जाते हैं और अपना समस्त साहस व ताकत क्षीण होती महसूस करते हैं। परन्तु वास्तव में हम अपने आप से उस धनी के बल को हटा देते हैं जो कि हम रुहों के लिए माया को जीतने का शस्त्र है। हम माया में मात वहीं खाते हैं। जहाँ हम इस शस्त्र या धनी के बल को साथ नहीं लेते हैं और इस बात को भूल जाते हैं कि परमधाम से स्वयं धाम धनी आए और साथ ही हमारे लिए ही समस्त तोफे व न्यामतें लाए हैं। पर जरूरत इस बात की है कि हम अपना यकीन व ईमान कायम रखें, जब तक हमको इस बात का इलम नहीं था कि मैं कौन मेरा धनी कौन है और उनसे मेरा क्या सम्बन्ध है। बस तब तक ही वह हमसे जुदा थे पर जब श्री राजो की मेहर से इस बात की समझ आ जाए कि वह धाम धनी मेरे हैं और मैं उस प्राण प्रीतम की हूँ तभी से हमें धनी का बल हुकम और कुव्वत प्राप्त हो जाती है फिर चाहे माया के कितने रूप कष्ट बनकर सामने आ जायें लेकिन पास धनी के बल होने के कारण वह हमारे सामने कुछ भी न होने के बराबर होते हैं। परन्तु हमारी बात तो कुछ और ही हैं। क्योंकि यह सब कुछ हम आकर यहाँ भूल गए और हमारी स्थिति तो उस शेर की भाँति हो गई जो गीदड़ों में आकर अपने आपको गीदड़ समझने लगा और अपने बल व शक्ति को पहचान ही नहीं पाया उसी तरह हम भी अपनी पहचान को भूलकर अपना बल व शक्ति खो बैठे हैं। धनी बार-बार हमें पहचान करवा रहे हैं कि तुम केसरी सिंह हो और केसरी सिंह की तरह दहाड़ कर चलो क्योंकि ऐ रुहों तुम मेरे अंग हो और तुम में मेरा बल और ताकत है। जरा जाग के तो तुम देखो– जैसा कि वाणी में भी लिखा है।

मोमिन बल धनी का,
दुनी तरफ से नाहें।

तो कहे धनी बराबर,
जो मूल स्वरूप धाम मांहे ।।

राजी ने यहाँ आकर मोमिनों का मरातबा ऊँचा किया व सारी शोभा अपने हाथों उन्होंने अपने मोमिनों को दी है। सारे कार्य वह स्वयं करते हैं सब बल स्वयं अक्षरातीत का चलता है

Nijanand App

सिर्फ शोभा लेने के लिए ही हम मोमिन तैयार नहीं होते हैं, क्योंकि हमको अपनी पहचान ही नहीं होती है और न ही पहचान अपने प्राणनाथ की होती है। हम इस माया में इतने मुरदार हो जाते हैं कि धनी के बार-बार चेतावनी देने पर भी हम अपने आपको व अपनी ताकत को नहीं पहचानते हैं। धाम धनी स्वयं कहते हैं कि तुम सिर्फ एक कदम ही चलो मैं दस कदम लेने को तैयार खड़ा हूँ तुम सिर्फ एक बार ही मेरा बल लेकर खड़े हो मैं तुम्हारे लिए सब कुछ लेकर तुम्हारे सिर पर एक पांव से खड़ा हूँ लेकिन शायद हम सुन्दर साथ इस बात पर विश्वास नहीं करते हैं कि धनी का बल कितना है और कैसे वह पल-पल अपनी रुहों पर मेहर व अपना प्यार बरसाने के लिए तैयार हैं। माया के जरा-जरा से झटकों में ऐसे गिर जाते हैं कि हम अपने आपको ही सब कुछ समझकर धनी के बल व मेहर को भूल जाते हैं। जबकि वह प्राणों के प्रीतम हमारे सिर खड़े होकर समस्त साथ को माया से बचाते हैं।

जैसा कि वाणी में भी लिखा है।

धनी जिन विघ सिर पर खड़े,
तहकीक जानत नाहें।
बिसर जात है नींद में,
दृढ़ होत न ख्वाब के माहें॥

जिस समय हमें राजी की मेहर से ये बात समझ में आ जाए तो ऐसा कोई कार्य नहीं जो हम मोमिन न कर सकें। हमारे सिर पर स्वयं नूर जमाल खड़े हैं। यदि कोई भी काय राजी इस तन से अपनी रुहों को शोभा देने के लिए करवाते हैं तो हम अपने आपको ही सब कुछ समझ कर श्री राजी के बल को भूल जाते हैं और हम ही राजी को आजमाने के लिए तैयार हो जाते हैं। जिसके बल पर हम सब कुछ प्राप्त करते हैं, उसी की ताकत को तौलने के लिए तैयार हो जाते हैं और हमारी हालत उन बल्बो के समान हो जाती है जब प्रत्येक बल्ब जलता है तो सोचता है कि मेरे जितना प्रकाश कोई नहीं दे सकता मैं अंधकार को दूर कर रहा हूँ। तब वह भूल जाता है कि मेरे पीछे कोई पावर हाऊस है जिससे सब जगह बिजली जा रही है। यदि पावर हाऊस ही करेंट देना बन्द कद दे तो बल्बों का क्या जोर कि वह जल सकें। उसी तरह से ही हमारी हालत हो रही है। यदि राजी का बल हमें न मिलें तो इस माया में हम जीवों से कही ओधक पीछे होंगे।

श्री राज जी का बल व मेहर प्यार व सारे खजोने तो आए ही रुहों के लिए हैं लेकिन हम यह खजोने व आनन्द लेना ही नहीं चाहते हैं। हम तो दुःख चाहते हैं और इस माया को लगते हैं–

जैसा कि वाणी में भी लिखा है।

लागोगे दुख को तो,
दुख तुमको लागसी।
याद करो निज सुख को,
तो दुख तुमसे भागसी॥

Nijanand App

हम ही इस माया के मोह में अपने आपको फँसाते हैं। जिस दिन हम यह ध्यान कर लें कि इस माया में हमारा कुछ नहीं हमारा सब कुछ तो श्री राज श्यामा जी के चरणों में है। तो क्या ताकत है। इस माया की कि यह हमारे तन को भी छू जायें-दूर से ही भागती जाएगी। राज जी के चरणों में इतना बल है। श्री राज जी के नाम में जिसको हम हमेशा ही बिसर जाते हैं। कोई काम मुश्किल नहीं है। चाहे वह जागनी का या कोई अन्य हो यदि मोमिन के साथ धनी का बल है और वह इस बल को अपने साथ लेकर चलती है तो सहजता से ही सारे काम सफल होते जाते हैं पर सदा भाव ये ही कि मैं कुछ नहीं हूँ जो कुछ हैं सब धाम धनी है। तो राज जी की मेहर तो इतनी अपार है। स्वयं श्री राज जी जी भी कहते हैं कि-

मेहर ठाढ़ी रहे तो,
मेहर मापो जाये।
मेहर पल में बढ़े कोटि गुनी,
सो क्यों मेहरे मेहर मपाये॥

बस भाव ये रखना है कि मोमिनों का बल ही धाम धनी है और उस बल से ही मोमिनों के कदम बढ़ते हैं और बढ़ते रहेंगे यहाँ तक कि इस खेल में स्वयं श्री राज जी महाराज ने रुहों को अपना बल व ताकत देकर उनका इतना बड़ा मरातबा किया है कि हर एक रूह महामति हैं। यदि वह राज जी के हुकम को लेकर कार्य करें और मोमिनों ने तो दुनियाँ को मुक्ति देनी है। स्वयं श्री राज जी ने कहा-"जो मेरी खबर दे दो औरों को तो चले तुम्हारा हुकम" प्रत्येक रुह में धनी का बल वह ताकत है जो त्रिगुण में नहीं और न ही किसी देवी-देवता में है। बस सिर्फ कमी है तो हमारे पास यकीन ईमान श्री राज जी ने जिन तनों से भी कार्य लिया, कार्य तो स्वयं किया लेकिन शोभा उनके नामों को ही दी और वे जानते हैं कि ये शोभा स्वयं धनी की है-जैसे इन्द्रावती के अन्दर बैठकर अपने बल से सारा कार्य किया लेकिन सारी शोभा इन्द्रावती के नाम को दी है। इन्द्रावती ने वाणी में लिखा है।

'धनी के केहलाये मैं,
कहे तुमको चार शब्द'

धनी का बल यदि आ गया तो हमारे अन्दर धनी आ गये स्वयं श्री राजजी ने भी लिखा है कि "इन्द्रावती के मैं अगे संगे इन्द्रावती मेरों अंग जो अंग सौंपे इन्द्रावती को तांर्थ प्रेमे रमाड़ू रंग।"

हमारे पास जो कुछ भी है। वह सब धनी का बल ही है। हम अपने आप में कुछ भी नहीं है। बस हमको अपने आप में वह यकीन व ईमान कायम रखना है।

Nijanand App